हिन्दी भजन-पायो जी मैंने राम रतन धन पायो
पायो जी मैंने
पायो जी मैंने राम रतन धन पायो ..
वस्तु अमोलकि दी मेरे सतगुरु करिपा करि अपनायो .
जनम जनम की पूंजी पाई जग में सभी खोवायो .
खरचै न खूटै चोर न लूटै दिनि दिनि बढ़त सवायो .
सत की नाव खेवटिया सतगुरु भवसागर तर आयो .
मीरा के प्रभु गरिधिर नागर हरष हरष जस गायो .